# विपश्यना

साधकों का
मासिक प्रेरणा पत्र

बुद्धवर्ष २५४५, भाद्रपद पूर्णिमा, २ सितंबर, २००१ वर्ष ३१ अंक ३


**धम्मवाणी**

**सुखो बुद्धानमुप्पादो, सुखा सद्धम्मदेसना।**
**सुखा सङ्घस्स सामग्गी, समग्गानं तपो सुखो॥**
– धम्मपद- १९४

सुखदायी है बुद्धों का उत्पन्न होना, सुखदायी है सद्धर्म का उपदेश। सुखदायी है संघ की एकता, सुखदायी है एक-साथ तपना।

## विपश्यना यात्रा २००१

(क्रमशः)...

दिनांक- २७-०२-२००१, मंगलवार

### कुसीनारा (कुशीनगर)

गोरखपुर जंक्शन पर हम प्रातःकाल पहुँचे। बस द्वारा **धम्मविमुत्ति** विपश्यना केन्द्र पर लगभग ११-३० बजे के बाद पहुँचे। तंबू में हम ठहरे। पूज्य गुरुजी एवं माता जी भी तंबू में ही ठहरे थे। तंबू में ठहरना बड़ा आनंददायक लगा। केन्द्र की क्रय की हुई अपनी भूमि आठ एकड़ है। एक कार्यालय-कक्ष बनाया गया है। निकट भविष्य में केन्द्र निर्माण का कार्य संचालित किया जावेगा। हरे-भरे खेतों से घिरे हुए मैदान में यह स्थान एकांत ध्यान के लिए बहुत ही अनुकूल है। जहां पड़ाव डाला था वहाँ के पंडाल में धर्म-यात्रियों ने १.०० से ३.३० बजे तक ध्यान किया। सायंकाल ३-३० से ४-३० तक पूज्य गुरुजी का धर्म-प्रवचन सुना। पूज्य गुरुजी का यह अकेला प्रवचन ही ऐतिहासिक पृष्ठ-भूमि सहित भगवान के महापरिनिर्वाण तक की जानकारी देने के लिए पर्याप्त है। आज ही पूज्य गुरुजी का एक और उद्‌बोधक धर्म-प्रवचन महापरिनिर्वाण स्थल के प्रांगण में हुआ। साधकों के लिए अत्यंत प्रेरणादायी।

१- भगवान का महापरिनिर्वाण यहीं कुशीनगर में हुआ, जिसे भगवान के समय में कुसीनारा कहते थे। कुसीनारावासी मल्ल वाशिष्ठ गोत्र के थे। हिरण्यवती नदी के परले तीर पर कुसीनारा उपवत्तन, मल्लों का शालवन था। यहीं पर जुड़वें शाल वृक्षों के बीच में उत्तर की ओर सिरहाना कर चारपाई बिछायी गयी। भगवान दाहिनी करवट सिंहशय्या से लेट गये।

भगवान ने लुम्बिनी के एक उपवन में जन्म लिया। बोध गया में बोधि-वृक्ष के नीचे बोधि प्राप्त की। यहां मल्लों के शालवन में दो शाल वृक्षों के बीच महापरिनिर्वाण हुआ। ये तीनों घटनायें वैशाख की पूर्णिमा को घटित हुई। खुली प्रकृति में, खुले आसमान के नीचे।

भगवान ने आनंद से कहा कि वह कुसीनारा के मल्लों से जा कर कहे कि आज रात के पिछले पहर तथागत का महापरिनिर्वाण होगा। रोते-कलपते मल्ल नर-नारी शालवन की ओर भागे। भीड़ उमड़ पड़ी। आनंद ने, प्रथम याम में (छः से दस बजे रात तक) कुसीनारा के मल्लों से भगवान की वन्दना करवा दी।

कुसीनारा का सुभद्र नामक परिव्राजक इस बात पर अड़ गया कि वह भगवान से धर्म सीखेगा, तब आगे बढ़ेगा। आनन्द कह रहे थे कि वह भगवान को इस समय कष्ट न दे। भगवान ने आनन्द के साथ कथा-संलाप सुन लिया। धर्म की गंगा में बाढ़ आ गई। महाकारुणिक की करुणा में उफान आ गया। तथागत ने महापरिनिर्वाण के कुछ समय पहले तक सुभद्र को धर्म सिखाया। वह प्रव्रजित हुआ। उपसंपदा प्राप्त की। भगवान का अंतिम शिष्य हुआ। अचिर काल में ही अरहंत हुआ।

२- भगवान के अंतिम बोल– **वयधम्मा सङ्खारा, अप्पमादेन सम्पादेथ** – संस्कार व्यय-धर्मा हैं (कृतवस्तु नाशवान हैं)। अप्रमाद के साथ इस सच्चाई का संपादन करो (आलस्य न कर जीवन के लक्ष्य का संपादन करो।)– यहीं पर तथागत ने देशित किया।

३- उनकी स्मृति में यहां दो विहार बने। एक जहाँ भगवान का महापरिनिर्वाण हुआ वह महापरिनिर्वाण विहार कहलाया तथा दूसरा जहाँ भगवान की देह की अंतिम दाहक्रिया की गयी– वहाँ 'मुकुट बंधन विहार' बना। अब वहां 'मुकुट-बंधन' नामक मल्लों का चैत्य है (वर्त्तमान माथा कुँअर, कसया, जिला देवरिया)।

३- यहां दो अशोक स्तंभ स्थापित किये हुए पाए गये। अशोक-स्तंभ इस बात का प्रमाण है कि यह वही स्थान है जहाँ भगवान महापरिनिर्वाण को प्राप्त हुए तथा जहाँ भगवान का दाह-संस्कार किया गया। इसे अंगाराचैत्य भी कहते हैं।

४- **महाकाश्यप** पाँच सौ भिक्षुओं के महाभिक्षुसंघ के साथ पावा और कुसीनारा के बीच, सड़क से आ रहे थे। यहां उन्हें जानकारी मिली की भगवान सप्ताह भर पहले परिनिर्वृत हो गये।

५- बुढ़ापे में अभी-अभी प्रव्रजित हुआ भिक्षु सुभद्र सब को चुप कराते हुए बोला– "ठीक हुआ हम उस महाश्रमण से मुक्त हो गये। 'यह करो, यह मत करो' कहते हुए हमें पीड़ित किये रहता था। अब जैसा चाहेंगे वैसा करेंगे।"

सुभद्र का यह कथन, भगवान की मूल-वाणी को संगृहीत करने हेतु महाकाश्यप के लिए निमित्त बन गया। फलस्वरूप प्रथम संगायन हुआ। भगवान की वाणी का संग्रह भगवान के

महापरिनिर्वाण के चार माह बाद राजगृह की सत्तपण्णी गुहा के प्रांगण में किया गया। मूल बुद्ध-वाणी तथा विपश्यना-विधि (प्रायोगिक पक्ष) कालांतर में भारत से तो लुप्त हो गई। परंतु बर्मा, श्रीलंका, थाईलैंड, कम्बोडिया, और लाओस में संभाल कर रखी गई। बर्मा ने तो भगवान के प्रायोगिक पक्ष (विपश्यना-विधि) को भी संभाल कर रखा। बर्मा में छट्ठ संगायन हुआ। अतः हम उनके कृतज्ञ हैं कि भगवान की वाणी ही नहीं उनकी विपश्यना-विधि भी हमें आचार्य परंपरा द्वारा प्राप्त हुई। फलतः हम विपशयना द्वारा लाभान्वित हो अपने आचार्य सहित उन स्थानों पर ध्यान करते हुए कृतज्ञता ज्ञापन कर श्रद्धानत हो रहे हैं।

जहाँ महापरिनिर्वाण अवस्था की भव्य विशाल मूर्ति स्थापित है, भगवान दाहिनी करवट सिंहशय्या पर लेटे हुए हैं, उस मंदिर के समक्ष प्रांगण में पूज्य गुरुजी का प्रेरक प्रवचन हुआ। धर्ममय वातावरण में ध्यान किया गया। धर्म-भाव से पुलकित सभी धर्म-यात्री धम्मविमुक्ति विपश्यना केंद्र पर वापिस लौट आये। रात्रि विश्राम।

**दिनांक- २८-०२-२००१। बुधवार।**

## लुम्बिनी (नेपाल)

कुशीनगर के धम्मविमुक्ति विपश्यना केन्द्र से सभी धर्म-यात्री बस द्वारा लुम्बिनी (नेपाल) के लिए प्रातःकाल ६:३० बजे रवाना हुए। हम वहाँ दिन में १२-३० बजे पहुँचे।

यह बोधिसत्त्व सिद्धार्थ गौतम की जन्म-भूमि है। पूज्य गुरुजी द्वारा यहां के विपश्यना केन्द्र का नाम **धम्म-जननी** दिया गया है। मात्र भूमि-क्रय हुआ है। विकास शेष है।

१- सिद्धार्थ गौतम के जन्म के समय लुम्बिनी – कपिलवस्तु और देवदह के मध्य स्थित – एक उपवन थी। यहीं पर वैशाख की पूर्णिमा को सिद्धार्थ गौतम का जन्म हुआ था। यहां स्थापित अशोक-स्तंभ इस बात का प्रमाण है कि सम्राट अशोक यहां आये थे। स्तंभ पर उत्कीर्ण है सम्राट अशोक के आगमन की बात। वर्तमान समय में इसे **रुम्मिनदेई** के नाम से जाना जाता है। भगवान लुम्बिनीवन में ठहरे थे तथा उन्होंने यहां पर देवदहसुत्त (पपञ्चसूदनी, मज्झिम अट्ठकथा भाग दो, ८१०) की देशना की थी।

२- यहां उत्खनन द्वारा प्राप्त पुरातन पाषाण प्रतिमा स्थापित एक महामाया मंदिर है जिसमें जननी महामाया एक शालवृक्ष की डाली को पकड़ी हुई उत्कीर्ण की गई हैं। शिशु सिद्धार्थ जन्म ले चुका है।

इस मंदिर के सम्मुख एक तालाब है, जिसके गर्म तथा शीतल जल स्रोत में शिशु को स्नान कराया गया था।

एक पुरातन खण्डहर है। धर्म-यात्रियों ने इस पवित्र वातावरण में ध्यान किया तथा मुदित हुए।

३- मंदिर के पास ही पुरातत्व-विभाग की ओर से खुदाई चल रही थी। वहाँ से सम्राट अशोक द्वारा स्थापित संगमर्मर की पट्टिका निकली है। और भी बहुत कुछ निकला है। वहाँ साधकों को जाने नहीं दिया गया। दूर से दर्शन किया। केवल गुरुजी और माताजी को ले गये।

४- पास में अशोक-स्तंभ दिखता है। उसके परे मैदान में नेपाल विपश्यना समिति की ओर से भव्य पंडाल बना है। हजार से भी अधिक साधक साधिकाओं ने इस पंडाल में ध्यान किया और पूज्यगुरुजी का उद्‌बोधक धर्म-प्रवचन सुना। गुरुजी ने बताया – बुद्ध ने नेपाल की भूमि पर जन्म लिया और भारत के बोध-गया में बोधि प्राप्त की। ये दोनों स्थान दोनों देशों को जोड़ने वाले स्थान हैं। उनकी वाणी में इस स्थान के महत्त्व को सुनकर सभी यात्री धर्मलाभी हुए।

## कपिलवस्तु (तिलौराकोट)

१- इससे २० किलोमीटर दूर प्राचीन कपिलवस्तु शाक्यों की राजधानी थी। आज इसे तिलौराकोट कहते हैं। सिद्धार्थ गौतम ने २९ वर्षों तक कपिलवस्तु में सुखोपभोग किया था। आज वही खण्डहर है। इस नगरी की स्थापना इक्ष्वाकु (ओक्काक) के पुत्रों ने कपिल ऋषि के आश्रम पर की थी। नगर के समीप लुम्बिनी वन था।

२- इसी के समीप रोहिणी नदी बहती है जो शाक्य एवं कोलिय राज्यों की सीमा बनाती थी। कपिलवस्तु गणतांत्रिक राज्य था। यहां की 'सन्थागारसाला' संसद भवन में सभी प्रकार के राजकाज संबंधी विषयों पर विचार-विमर्श कर निर्णय किया जाता था।

३- (क) भगवान बोधि प्राप्ति के पश्चात प्रथम वर्षावास के अंत में कपिलवस्तु आये थे। नगर के पास ही यहां के निग्रोधाराम में ठहरे थे। महाराज सुद्धोदन सहित सभी शाक्यों ने तथागत को प्रणाम किया।

(ख) सारिपुत्र के निवेदन पर यहीं भगवान तथागत ने महाबुद्धवंस की देशना की।

(ग) सिद्धार्थ गौतम स्वयं चार असङ्ख्येय्य और एक लाख कल्पों तक अपनी पारमिताओं को परिपूर्ण कर सम्यक सम्बुद्ध हुए। किसी आकस्मिक चमत्कार से वे बुद्ध नहीं हुए थे। हमें स्वयं अपने श्रम से तरना होता है, मुक्त होना होता है। कोई तथागत बड़े प्यार से मार्ग आख्यात करता है। मार्ग निर्देशन करता है। रास्ते पर चलते हुए मुक्त स्वयं होना पड़ता है।

४- इसी अवसर पर नन्द तथा पुत्र राहुल की प्रव्रज्या हुई थी। यहीं पर पिता महाराज सुद्धोदन तथा महापजापति गौतमी सहित राज परिवार एवं उनकी शाक्य परिषद ने धर्म का प्रथम साक्षात्कार किया। राहुल माता यशोधरा ने भी धर्म का प्रथम साक्षात्कार किया।

४- पिता सुद्धोदन के कहने पर यहीं भगवान ने विनय के इस नियम को बनाया कि माता-पिता की अनुमति के बिना किसी को भी प्रव्रजित नहीं किया जायेगा।

५- कपिलवस्तु से अनोमा नदी ३० योजन राजगृह से ६० योजन की दूरी पर स्थित है।

६- भगवान कपिलवस्तु से तुरंत ही राजगृह के लिए लौट चले। रास्ते में अनुपिया के वन में जो कि मल्लों के राज्य में था **भद्दिय शाक्य-राजा, अनुरुद्ध, आनन्द, भृगु, किम्बिल, देवदत्त और सातवाँ उपालि नापित** भगवान से मिले और प्रव्रजित हुए।

७- भगवान कपिलवस्तु में अनेकों बार आये। दो बार का आना प्रमुख है। (क) रोहिणी नदी के पानी के बँटवारे को लेकर शाक्यों और कोलियों के विवाद को सुलझाने के लिए; (ख) विडूडभ को शाक्यों पर चढ़ाई करने के पूर्व तीन बार मना करने के लिए गये। चौथी बार अवश्यम्भावी जान नहीं गये।

८- आर्कियोलॉजिकल सर्वे वालों ने अत्याधुनिक टेकनोलॉजी द्वारा आकाश से सर्वे कर पता लगाया है कि वर्तमान तिलौराकोट के नीचे कोई १३ किलोमीटर में फैली हुई एक पुरातन नगरी दबी हुई है। ऐसा ही तथ्य श्रावस्ती के भू-गर्भ के संबंध में भी सामने आया है। अस्तु, वे अपनी खोज में लगे हैं।

९- बुद्ध-वाङ्मय में इस कल्प को भद्र कल्प कहा जाता है। जब सम्राट अशोक यहां आये थे तो उन्होंने हमारे गौतम बुद्ध के पूर्व के दो बुद्धों के स्तूप देखे और उनका जीर्णोद्धार किया था। अर्थात हमारे बुद्ध के पूर्व इसी कल्प में **ककुसंध तथा कोणागमन,** इन दो बुद्धों का भी जन्म स्थान यही था। इनके पहले हुए थे **महाकस्सप** । इस प्रकार चार सम्यक सम्बुद्ध हो चुके। इसी भद्र कल्प में पाँचवे बुद्ध होने वाले हैं **अरि-मेत्तेय** ।

* * *

भगवान श्रमण परंपरा के थे। अपने श्रम द्वारा कोई भी व्यक्ति उस अवस्था को प्राप्त कर सकता है, जिसे मुक्ति, मोक्ष, या निर्वाण कहा जाता है जो इन्द्रियातीत, भवातीत, लोकोत्तर अवस्था है। स्वयं भगवान गौतम बुद्ध बोधि प्राप्ति के पश्चात किसी के तारक नहीं हुए। पिता सुद्धोदन, क्षीरदायिनी माता महापजापती गौतमी, पत्नी यशोधरा, एवं पुत्र राहुल को भी मार्ग ही दिखाया। मुक्ति के लिए उन्हें भी स्वयं श्रम करना पड़ा। संपूर्ण भिक्षु, भिक्षुणी, उपासक, उपासिकाओं को धर्म सीख कर अभ्यास करना पड़ा, श्रम करना पड़ा। श्रमण बन निर्वाण का साक्षात्कार किया। गृहस्थ उपासकों के लिए भी वही मार्ग था। उन्होंने धर्म को धारण किया। स्वयं श्रम करते हुए मुक्त हुए। विपश्यना द्वारा उस समय का भारत लगभग पाँच सौ वर्षों तक लाभ प्राप्त करता रहा क्योंकि वह शील, समाधि, प्रज्ञा का अभ्यास करते रहा। यह विद्या सार्वजनीन, सार्वदेशिक और सार्वकालिक है। जो भी कोई, जहाँ कहीं भी, जब कभी भी इस विद्या का अभ्यास करेगा आशुफल प्राप्त करेगा। अभी और यहीं।

भारत इससे वंचित हुआ तो इस क्षेत्र में अकिंचन हो गया।

अब इसका पुनरागमन हुआ है। लाभकारी फल आने लगे हैं। अभ्यास तो प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं करना होगा।

**लुम्बिनी** धर्म-यात्रा का अंतिम पड़ाव था। सिद्धार्थ गौतम बुद्ध के ८० वर्ष की घटनाओं से संबंधित ऐतिसाहिक साक्ष्य का हम सबने दर्शन किया। कोई कर्मकांड पूरा नहीं किया। चलते-फिरते विपश्यना के शिविर में भाग ले कर धर्म का जीवन जीते हुए इन पवित्र स्थलों का दर्शन किया। अकूत मंगल हुआ।

* * *

लुम्बिनी से हमलोग सीधे गोरखपुर स्टेशन पहुँचे। रात ११-०० बजे हम वापिस मुंबई के लिए रवाना हुए।

लौटती गाड़ी में दिनांक ०१-०३-२००१ को पूज्य गुरुजी एवं माता जी के सान्निध्य में एक दिवसीय शिविर संपन्न हुआ। चलती गाड़ी में यह विपश्यना शिविर अत्यंत प्रभावशाली रहा। धर्म की उत्ताल तरंगों ने संपूर्ण विश्व को अनुप्राणित कर दिया।

पूज्य गुरुजी ने चलती गाड़ी में ध्वनिप्रसारण यंत्र (लाउडस्पीकर) द्वारा साधकों के प्रश्नों का उत्तर दिया। सबको प्रेरणा प्राप्त हुई। पूज्य गुरुजी और माताजी ने गाड़ी के प्रत्येक डिब्बे में जाकर सभी साधकों को मंगल मैत्री दी। इस तरह दिनांक २ मार्च को भी हम लोग धर्ममय वातावरण में ही रहे। रात्रि १०-०० बजे हम मुंबई स्टेशन पर पहुँचे। इस प्रकार मैत्रीपूर्ण वातावरण में इस ऐतिहासिक विपश्यना-यात्रा का सफल समापन हुआ।

समाप्त!

## टीवी चैनलों पर पूज्य गुरुजी के प्रवचन

जैसे कि आप को विदित है हर सोमवार प्रातः ७:०० बजे **जी-टीवी पर** पूज्य गुरुजी का प्रवचन जागरण कार्यक्रम के अंतर्गत प्रसारित होता है और दर्शक इससे प्रेरित होकर विपश्यना शिविरों में सम्मिलित होकर लाभान्वित होते हैं।

इसी प्रकार **"आस्था"** के अंतर्राष्ट्रीय चैनल पर प्रतिदिन सायं ५ बजे (भारत में) पूज्य गुरुजी के हिंदी प्रवचन क्रमशः प्रसारित हो रहे हैं जिसे बरमा में सायं ६ बजे तथा इसी प्रकार अन्य देशों में स्थानीय समयानुसार इसे सुन कर अनेक लोग शिविर में सम्मिलित हो रहे हैं। साधक तथा अन्य दर्शक इसका लाभ ले सकते हैं।

## बालशिविरों के शिक्षकों एवं क्षेत्रीय संयोजकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम

सितंबर १६ व १७ - पुणे
सितंबर २९ व ३० - रायपुर
अक्तूबर २ व ३ - नागपुर
अक्तूबर ६ व ७ - बैंगलोर

बालशिविर में रुचि रखने वाले आचार्य, वरिष्ठ स. आ. तथा स. आ. भी प्रेक्षक के रूप में भाग ले सकते हैं। (प्रथम दिन प्रातः १० बजे से सायं ९ बजे तक प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा दूसरे दिन बच्चों का शिविर भी चलेगा।)

संपर्क सूत्रः रायपुर के लिए - श्रीमती अनिता धीरेन शाह, २७ सत्यम्, नगर निगम कालोनी, समता मेन रोड, रायपुर- ४९२००१ और अन्य स्थानों के लिए स्थानीय विपश्यना केंद्र।

## धम्मजननी, लुंबिनी विपश्यना केंद्र का निर्माण कार्य आरंभ

धम्मजननी पर लगभग १६० साधकों के लिए मुख्य साधना-कक्ष 'धम्महॉल' का कार्य आरंभ हो चुका है जो कि दीपावली तक पूरा हो जायगा। इसकी मास्टर प्लानिंग के अंतर्गत पुरुष व महिला आचार्य निवास, १०० पुरुष, १०० महिलाओं के लिए निवास, पुरुष व महिला के लिए अलग-अलग भोजन कक्ष, रसोईघर, स्टोररूम तथा धर्मसेवक/सेविका निवास और वाचमैन निवास आदि का निर्माण होगा। इसके लिए अनुमानित लागत तीन करोड़ (नेपाली) आंकी गयी है। इस धर्मयज्ञ में पुण्यार्जन के इच्छुक लोग निम्न पते पर संपर्क कर सकते हैं- व्यवस्थापक, धम्मजननी, विपश्यना केंद्र, लुंबिनी (नेपाल) ईमेल = <dhammajanani@yahoo.com>

## जेलों में विपश्यना शिविरों की बढ़ती हुई मांग

दिल्ली तथा महाराष्ट्र की अनेक जेलों में होने वाले विपश्यना शिविरों से प्रभावित होकर भारत तथा विश्व की अनेक जेलों में शिविर लगने आरंभ हो गए हैं। पिछले एक वर्ष में केवल भारत की विभिन्न जेलों - यथा दिल्ली, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, पंजाब, राजस्थान, तमिलनाडु, कलकत्ता की जेलों में ४६ शिविर लगे जिनमें २,२१५ लोगों ने धर्मलाभ उठाया। गत एक वर्ष में विदेशों की जेलों में अमेरिका में दो, यू.के. में एक, न्यूजीलैंड में दो तथा ताईवान में एक शिविर लगे। विगत ५ से १६ मार्च, २००० में जबलपुर (म.प्र.) की जेल में ६० पुरुष कैदियों के शिविर की सफलता से उत्साहित होकर अधिकारियों ने १८ से २९ फरवरी,२००१ तक **३५ महिला कैदियों** के लिए जेल में शिविर आयोजित करवाया। सभी महिलाओं ने पुनः ऐसे शिविर लगाने की मांग की।

मध्य प्रदेश और आंध्रप्रदेश की सरकार ने महाराष्ट्र सरकार का अनुसरण करते हुए अपने सरकारी अधिकारियों को विपश्यना शिविरों का लाभ ले सकने के लिए सवैतनिक अवकाश की घोषणाएं की हैं। दिल्ली की **पुलिस अकादमी** में आगामी नवंबर में एक साथ १२०० पुलिस अधिकारियों के लिए शिविर लगने जा रहा है जिसमें लगभग ३० सहायक आचार्य सेवा देंगे। यहां के **'धम्मरक्खक'** विपश्यना केंद्र में छोटे-छोटे कई शिविर पहले ही लग चुके हैं और उनके परिणाम से प्रभावित होकर वरिष्ठ पुलिस अधिकारी सुश्री किरण बेदी के आग्रह पर ऐसे महाशिविर का आयोजन हो सकना संभव हुआ है।

## चक्षुहीनों को धर्मलाभ

'धम्मपुण्ण' पुणे विपश्यना केंद्र पर पिछले १८ से २९ जून तक ८२ चक्षुहीनों के लिए लगा शिविर बहुत सफल रहा। बाहर की दुनिया न देख सकने वाले ये प्रज्ञाचक्षु सचमुच अपनी अंतर्प्रज्ञा जगा कर बहुत प्रसन्न हुए। इससे उत्साहित होकर व्यवस्थापकों ने आगामी १९ से ३० सितंबर तक पुनः एक शिविर आयोजित करने का कार्यक्रम बनाया है, जिसमें अपनी बुकिंग करा कर विश्व के किसी भी कोने से प्रज्ञाचक्षुजन पधार कर इसका लाभ ले सकते हैं।

## नव नियुक्तियां :

### सहायक आचार्य

१. श्री बसंतलाल पटेल, जबलपुर
२. श्रीमती सुलोचना श्रवणकुमार अग्रवाल, नाशिक
३. श्री बी. नरेंद्र रेड्डी, निजामाबाद
४. श्री कलंधर रेड्डी, करीमनगर (आं.प्र.)
५. श्रीमती एस. सुजाता, सिकंदराबाद
६. श्रीमती सेरसेम्बे सत्यवनी, हैदराबाद
7. Miss Carolyn Dean, Aust.
8. Mrs. Grace Reed, Australia
9. Ms. Pauline Marshall, Aust.
10. Ms. Janet Zimmerman,''
11. Mr. Virak Chan
12. Ms Marianne Eriksdotter

### बाल-शिविर शिक्षक

१. श्री देवेंद्र डी. उबाले, इगतपुरी
२. कु. गायत्रीदेवी, इगतपुरी
३. श्री ताराचंद सीताराम जाधव, नाशिक
४. श्रीमती सिंधु ह. नारनवरे, नाशिक
५. कु. कविता अ. पेटकर, नाशिक
६. श्री मधुकर स. काले, नाशिक
७. श्री पांडुरंग शं. पंडित, नाशिक
८. श्री बकुल गुलाब जाधव, नाशिक
९. श्री मोहनभाई घादिया, राजकोट
१०. कु. हेतल पटेल, राजकोट
११. श्रीमती अनुराधा कामत, बैंगलोर
१२. श्रीमती मृदुला मधुसूदन, बैंगलोर
१३. श्री एस.एम. ज्योतिप्रकाश, बैंगलोर
१४. श्रीमती अर्चना शेखर, बैंगलोर
१५. श्री ए. वेंकटेश, बैंगलोर
१६. श्रीमती बी. विनसेंट, बैंगलोर
17. Mrs Somaly Kuoch, France
18. Mrs Michelle-Vincent France
19. Mr Bjorn - Kiehne, Germany

## दोहे धर्म के

याद करूं जब बुद्ध की, करुणा अमित अपार।
तन मन पुलकित हो उठे, चित छाये आभार॥

यही बुद्ध की वंदना, पूजन और प्रणाम।
शुद्ध धरम धारण करूं, मन होवे निष्काम॥

चलते चलते धरम पथ, चित्त शुद्ध जो होय।
तो सम्यक सम्बुद्ध का, समुचित पूजन होय॥

संप्रदाय या जाति का, जहां भेद ना होय।
शुद्ध सनातन धर्म है, वंदनीय है सोय॥

करूं वंदना धरम की, सादर करूं प्रणाम।
पग पग पग चलते हुए, पाऊं मंगल धाम॥

द्वेष द्रोह जागे नहीं, रहूं क्रोध से दूर।
यही धरम की वंदना, प्यार भरे भरपूर॥

**मेसर्स मोतीलाल बनारसीदास**
• महालक्ष्मी मंदिर लेन, ८ महालक्ष्मी चैंबर्स, २२ वार्डन रोड, मुंबई-४०००२६.
☎- ४९२३५२६, • सनस प्लाजा, शॉप ११-१३, १३०२, सुभाष नगर, पुणे-४११००२.
☎-४८६१९०, • दिल्ली- २९११९८५,• पटना- ६७१४४२, • वाराणसी- ३५२३३१,
• बैंगलोर- २२१५३८९,• चेन्नई- ४९८२३१५, • कलकत्ता- २४३४८७४
की मंगल कामनाओं सहित

## दूहा धरम रा

नमन करूं भगवन्त नै, जो सम्यक् सम्बुद्ध।
नमन करूं अरिहन्त नै, जो पावन परिसुद्ध॥

नमन करूं मैं बुद्ध नै, काया सीस नवाय।
जानूं काया फेन सी, बन बन बिगड़त जाय॥

गुण गाऊं मैं बुद्ध को, मुक्त कंठ साभार।
इसो धरम बांट्यो जगत, हुयो परम उपकार॥

धरम मिल्यो निरमळ हुयो, जीवन तन मन प्राण।
चित छायी किरतग्यता, चित छायो अहसान॥

बियाबान बन भटकतां, रयो हियो अकुलाय।
गूंजी वाणी धरम की, सतपथ दियो दिखाय॥

ईं धरती पर धरम को, होवै मंगल घोस।
दूर हुवै दुरभावना, जगै धरम को होस॥

**मेसर्स गो गो गारमेंट्स**
३१-४२, भांगवाड़ी शॉपिंग आर्केड,
१ला माला, कालबादेवी रोड, मुंबई - ४००००२.
☎ ०२२- २०५०४१४
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२४०३, दूरभाष : (०२५५३) ८४०८६, ८४०७६.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, ६९- बी रोड, सातपुर, नाशिक-४२२००७. **बुद्धवर्ष २५४५, भाद्रपद पूर्णिमा,** २ सितंबर,२००१

**वार्षिक शुल्क** रु. २०/-, विदेश में US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. २५०/-, " US $ 100. **'विपश्यना'** रजि. नं. १९१५६/७१. Regn. No. AR/NSK-46/2001,

Licenced to post **without Prepayment of postage** -- Licence number-- **AR/NSK-WP/3**
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-
**विपश्यना विशोधन विन्यास**
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२४०३
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
दूरभाष : (०२५५३) ८४०७६
फैक्स : (०२५५३) ८४१७६
Website: www.vri.dhamma.org
e-mail: <dhamma@vsnl.com>